IJNRD.ORG ISSN : 2456-4184
INTERNATIONAL JOURNAL OF NOVEL RESEARCH AND DEVELOPMENT (IJNRD) | IJNRD.ORG
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

ओमप्रकाश वाल्मीकि और उनका दलित साहित्य

(OMPRAKASH VALMIKI AUR UNKA DALIT SAHITYA)

शोधार्थी

रवीन्द्र कुमार
डॉ0 अमिता प्रकाश (असि0प्रोफेसर हिन्दी)
हिन्दी विभाग रा0स्ना0 महा0 सोमेश्वर (अल्मोड़ा)

सारांश-

ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने साहित्य के द्वारा दलित समस्याओं को जनता के सामने लाने का प्रयास किया है, जिसमें वह काफी हद तक कामयाब भी रहे हैं। कुछ कहानियां पढ़े -लिखें युवकों की आत्माभिव्यक्ति को व्यक्त करती है। तो कुछ आदिवासी महिलाओं की संवेदनओं को भी व्यक्त करती है। ये सभी कहानियां दलित सामाजिक चेतना को दर्शाती है। जो कथाकार ने स्वानुभूति के सहारे न लिखकर अनुभूति के सहारे लिखी है। इन कहानियों के माध्यम से दलित संवेदना का व्यक्त किया गया है। जागृत दलित समाज विद्रोह भी कर सकता है। दलित जागृति में ही दलितों का उत्कर्ष है। इन कहानियों में दलितों पर किये गये अत्याचार-अन्याय मानवता पर प्रश्न चिन्ह्न भी लगातें हैं। ओमप्रकाश वाल्मीकि की कविताओं में समाज की विसंगतिपूर्ण स्थिति का बहुत ही सही ढ़ग से चित्रण हुआ है। इनकी कविताएं सामाजिक परिवर्तन की मांग करती हैं। जो दलित मूक्ति के सवालों पर पूर्ण रूप से अम्बेडकरवादी है। सामाजिक क्षेत्र सें उनका पूर्ण रूप से सारोकार हुआ है। दलितों के साथ सवर्णों का व्यवहार बहुत ही खराब रही है। सवर्णों की नीतियों, कुटिलताओं, दलित स्वर्ण आपसी संबंधों को कवि ने अपने साहित्य में उकेरा है। राजनीति में इनका कोई स्थान नहीं है। दलित महिलाओं की स्थिति समाज में दोहरे शोषण की रही है। जिसे घर और बाहर दोनों स्थितियों में परेशानी उठानी पड़ी है। अन्याय और तिरस्कार सहकर भी उन को अपमान सहना पड़ता है। इसलिए इन दलितों के यथार्थ जीवन को व्यक्त करने वाली भाषा का प्रयोग साहित्य में किया गया है। दलितों ने जो जीवन जीया है उस परिवेश की भाषा को कवि ने वैसे ही स्वीकार किया है।

मूल शब्द- दलित पैंथर, भूमिहीन, चेतना , अम्बेडकरवाद ,सहानुभूति, ब्राह्ममणवाद, सामनतवाद आदि

आधुनिक दौर में हिन्दी साहित्य के अलावा भी दलित साहित्य लगभग-लगभग सभी भारतीय भाषाओं में लिखा जा रहा। देश में बोली जाने वाली मराठी, बंगला, हिन्दी, गुजराती, तेलगू, कन्नड़ पंजाबी आदि भाषाओं के दलित लेखक अपनी लेखनी से सृजन कार्यों को आगे बढ़ा रहे। उनकी लेखनी से रचित विभिन्न हिन्दी की साहित्यिक विधाओं में रचनाएं लगातार प्रकाशित होती है। इन रचनाओं का मूल उद्देश्य समाज में व्याप्त वर्ण-व्यवस्था के खिलाफ अवाज बुलंद कर उसको समाज से दूर करना है। समस्त दलित लेखन की उपज द्विजों द्वारा किया गया दलितों का सामाजिक बहिष्कार है। उच्च वर्ग के लोगों द्वारा समाज में दलितों को उनके अधिकारों, धन-सम्पत्ति, ज्ञान और शाक्ति जैसे महत्वपूर्ण विषयों से वंचित रखा है। उच्च वर्ग द्वारा दलितों के जीवन संघर्ष द्वारा अर्जित ज्ञान अनुभव को कोई महत्व नहीं दिया। अब कहा जा सकता है उच्च वर्ग की मानसिकता और हानिकारक मूल्यों के स्वरूप के कारण ही दलित दृष्टिकोण का विकास हुआ है।

हिन्दी के अन्तर्गत मराठी साहित्य के प्रभावस्वरूप दलित साहित्य लिखा जाने लगा। भारतीय भाषाओं के अन्तर्गत सर्वप्रथम दलित साहित्य लेखन का श्रेय मराठी साहित्य को जाता है। धीरे-धीरे इसका प्रभाव पूरे देश में फैलने लगा। 'दलित' साहित्य का जन्म मराठी साहित्य में हुआ है । दलित पैंथर की स्थापना 1972 में महाराष्ट्र में हुई थी । दलित पैंथर आन्दोलनों में दलित साहित्य के रचनाकारों की महत्वपूर्ण भूमिका रही। दलित साहित्य और दलित पैंथर एक दूसरे के लिए प्रेरणा के रूप में कार्य करते रहें है। सन् 1972 में "दलित लेखकों ने एक इश्तहार द्वारा सरकार को यह कहकर चुनौती दी थी कि यदि दलितों के प्रति बढ़ते अत्याचारों के विरोध में सरकार ने कुछ नहीं किया तो वे कानून अपने हाथ में ले लेंगें तथा एक सशस्त्र विद्रोह करेंगें।....इस प्रकार दलित 'विद्रोह' दलित साहित्य द्वारा संपोषित हुआ।"[1] दलित पैंथर द्वारा जारी किया गया घोषणा पत्र दलित साहित्य का मेनीफेस्टो कहलाता है। महाराष्ट्र में दलित लेखकों द्वारा वर्ण व्यवस्था पर आवाज बुलंद की है। मराठी में दलित लेखन की शुरूआत 1960 के दशक से हो चली थी। महाराष्ट्र में दलित पैंथर आन्दोलन समाज में उनके द्वारा चलाया गया एक आन्दोलन था। "समाजिक आन्दोलन किसी भी समाज में अलगाव तथा असमानता की परिस्थितियां पैदा होने पर मानवीय प्रतिक्रिया स्वरूप निर्मित होते है। कोई भी आन्दोलन किसी विशेष उद्देश्य के लिए कुछ व्यक्तियों या संगठनों का सामूहिक प्रयास होता है।"[2]

'दलित' शब्द एक वर्गीय शब्द है, जो न केवल अछूतों को ही अपने भीतर लेता है बल्कि अभाव ग्रस्त ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आदि सभी वर्गो व जातियों को जिनकी आर्थिक दशा खराब हो जो विभिन्न प्रकार के अभावों में जीवन जीते है, जैसे- खेत मजदूर, बंधुआ मजदूर,भूमिहीन, गरीब, बेराजेगार महिलाएँ और अनाथ बच्चे ये सब चाहे किसी भी जाति या धर्म से सम्बद्ध हो वर्गीय दृष्टि से दलित ही होते हैं। जैसे-जैसे जातियाँ टूटती हैं और वर्ग का उदय होता है। वैसे-वसे दलित शब्द व्यापक होता जाता है, किन्तु भारतीय समाज का यथार्थ संकुचित शब्द है, जबकि व्यापक शब्द काल्पनिक आदर्श अधिक है वास्तविक यथार्थ कम।

'दलित' शब्द के अर्थ विस्तार व परिचय के बाद दलित साहित्य का वास्तविक अर्थ जान लेना भी जरूरी है। दलित समाज को संबोधित कर लिखा जाने वाला साहित्य दलित साहित्य है। जिसके अन्तर्गत उसके वास्तवित जीवन को चरित्रार्थ करते हुये उसके ज्ञान और विद्रोह को चित्रित किया गया है। दलित साहित्य

समूह का साहित्य है, जिसमें अपनापन से ज्यादा सामाजिकता को महत्व दिया जाता है। इसी कारण समस्त दलित लेखकों का लेखन और सम्पूर्ण संघर्ष सामाजिकता के लिए है। जहां दलित मानव सर्वोपरि के साथ-साथ उसकी महता, उसके अधिकार , उसके स्वाभिमान की प्रतिरक्षा के लिए संघर्ष करने वाले लेखकों की लेखनी से रचित साहित्य दलित साहित्य की श्रेणी में हीं आता है।

90 के दशक में हिन्दी साहित्य में दलित चेतना उभरकर प्रचारित होने लगी। चेतना का अर्थ- जीवन, ज्ञान, अनुभूति, चुस्ती, जागना, दम, प्रयास, प्राणशक्ति, बुद्धि आदि शब्दों से लिया जाता है। अनुभव की स्थिति को भी चेतना कहा जाता है।

ओमप्रकाश वाल्मीकि के अनुसार-"जो दलितों की सांस्कृतिक, सामाजिक, ऐतिहासिक, भूमिका के तिलस्म को तोड़ती है।.....दलित मतलब मानवीय अधिकारों से वंचित सामाजिक तौर पर जिसे नकारा गया हो। उसकी चेतना मतलब दलित चेतना।'[3]

हरिनारायण ठाकुर के अनुसार- "दलित चेतना अछूतेपन या जातिगत हीनता की तरह गरीबी को उतना बड़ा कलंक नहीं समझती।"[4]

बजरंग बिहारी तिवारी के अनुसार-"दलित साहित्य का संबन्ध चेतना से है- वो चेतना जो नकार और विद्रोह से बनी हो तथा जिसे अम्बेडकरवाद का आधार प्राप्त हो।"[5]

समाजशास्त्र विश्वकोश के अनुसार- "जब व्यक्ति यह अनुभव करता है कि उसके तथा अन्य व्यक्तियों के व्यवहार में इस प्रकार की न केवल समानता है अपितु उनमें भाईचारा तथा उनमें एक दूसरे के प्रति सहानुभूति भी विद्यमान है, यह अनुभूति ही स्वजाति चेतना है।"[6] एक प्रश्न जो दलित चेतना से जुड़ा हुआ है उसके खुद की पहचान क्या है ? पूरे हिन्दू समाज की व्यवस्था को समझे बिना दलित की चेतना का समझना मुश्किल है। दशकों से हाशिए पर खड़ा जिसका वर्ण व्यवस्था में कोई स्थान न हो ऐसा वर्णहीन व्यक्ति आज अपने अस्तित्व की खोज करना चाह रहा है। इतिहास के पन्नों पर देखे तो उसका कोई अस्तित्व नजर नहीं आता सिर्फ गुजरा हुआ कल उसे यातनापुर्ण जीवन की याद दिलाता रहा है। उसकी यह पीड़ा व शोषण का एहसास ही दलित चेतना है। आज के दौर में दलित साहित्यकार पुराने सभी रीति-रिवाजों ,पूजा-पाठ, कर्मकाण्डों का छोड़कर मानव मूल्यों और जीवन मूल्यों को आधार बनाकर रचनाएं कर रहा है। ओमप्रकाश वाल्मीकि जी ने दलित चेतना के रूप में ब्राह्मणवाद-सामनतवाद का विरोध, वर्ग व वर्णहीन समाज की स्थापना, जातिभेद वर्णव्यस्था का विरोध कर्मकाण्ड और लिंगवाद का विरोध आदि प्रमुख बिन्दुओं का शामिल किया गया है।

अतः कहा जा सकता है कि डॉ0 अम्बेडकर द्वारा दलितों में चेतना जगाकर दलितों को मुक्ति संघर्ष के मार्ग से जोड़ने का काम किया। जो लोग गुलामी और वर्ण व्यवस्था के दलदल में फसें थे उनको ताड़ने के लिए अम्बेडकर जी द्वारा वैचारिक आन्दोलन को राजनीतिक रूप में प्रस्तुत किया। दलित साहित्य इसी चेतना की अभिव्यक्ति है।

दलित साहित्य और साहित्यकार दोनों मिलकर सामाजिक शोषण के विरूद्ध विद्रोह की भावना को जन्म देतें हैं । अस्पृश्यता, जातीयता, सामाजिक ,आर्थिक, सांस्कृतिक, अन्याय को खत्म करने वाला हथियार दलित

साहित्य ही है । हिन्दी में दलित साहित्यकार ओमप्रकाश वाल्मीकि के साहित्य में दलित चेतना के प्रति उत्सुकता और सर्तकता दिखाई देती है। वाल्मीकि के साहित्य में जाति की पीड़ा वर्ण-व्यवस्था के प्रति विद्रोह, स्वतंत्रता की आकांक्षा, स्वाभिमान को भाव बोध सामाजिक परिर्वन का लक्ष्य दिखाई देता है। पिछले दशक में हिन्दी साहित्य में एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुई 'दलित साहित्य का उभार' । वर्तमान में कई दलित लेखक अपनी लेखनी से दलितों की पीड़ा का अपनी कलम से उठा रहें है । दलित साहित्य की अधिकांश रचनाएं 1990 के बाद प्रकाशित हुई है। दलित साहित्य के अन्तर्गत कविता, कहानी, उपन्यास ,नाटक आदि प्रकाशित हुए है साथ ही अनेक पत्रिकाओं में दलित विशेषांक भी निकले है । दलित साहित्य आन्दोलन हिन्दी तक सीमित नहीं है यह अखिल भारतीय स्तर का आंदोलन है । जिसमें अग्रणी भूमिका निभाने वाले दलित साहित्यकारों में ओमप्रकाश वाल्मीकि का नाम सबसे पहले लिया जाता है। ओमप्रकाश वाल्मीकि ने हिन्दी दलित लेखन को एक नई पहचान प्रदान की है। यह बात इनके अध्ययन से स्पष्ट हो जाती है। व्यवहारिक दृष्टि से वाल्मीकि जी का व्यक्तित्व अत्यन्त सरल, सहज, एवं स्वाभाविक है। जिसे कोई भी देखे तो पुलकित हो जाए । हिन्दी दलित साहित्य में मुख्य रुप से ओमप्रकाश वाल्मीकि ने सड़ी हुई सामाजिक व्यवस्था को सभी लोगों के समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है। भारतीय समाज में प्रचलित वर्ण-व्यवस्था, भेदभाव, आदि का साक्ष्य उदाहरण के रूप में उनके साहित्य में मिल जाएगा। यदि हमने मनुष्य के रूप में जन्म लिया है तो समाज में प्राप्त मानव की तरह के हर अधिकार हमें भी मिलने चाहिए। जाति व्यवस्था ने दलित समाज का शोषण किया और उन पर कष्ट देने वाले नियमों को लाद दिया । ज्योतिबा फूले और अम्बेडकर साहब द्वारा आत्म सम्मान की भावना जागृत करने का प्रयास किया। इसी बात का आदर्श रूप में लेकर ओमप्रकाश वाल्मीकि ने अपने साहित्य को नई दिशा प्रदान की।

सदियों का संताप कविता संग्रह में उत्पीड़ितों और शोषितों को नायक बनाकर उनकी समाज के प्रति सोच को पस्तुत किया है। इस संग्रह में आक्रोश भाषिक विकास, विद्रोह आग्रह, आक्रमकता, दलित जीवन की पृष्ठभमि, उत्पीड़न के संदर्भ्र बिन्दु और उनसे उत्पन्न वेदनाओं के दंश, दलित संस्कृति की विशिष्ट जीवन दृष्टि को देखा जा सकता है।

बस्स!बहुत हो चुका ओमप्रकाश द्वारा रचित काव्य संग्रह है वाल्मीकि जी की हर रचना में दलित चेतना का स्वर जागृत होता रहा है। इस कविता संग्रह की सारी कविताओं में दलितों की पीड़ा और समाज में उनकी स्थिति और व्यवस्था के प्रति आक्रोश को दिखाया गया है।

जूठन यह ओमप्रकाश द्वारा लिखित आत्मकथा है जिसमें उन्होनें अपने जीवन से संबंधित यथार्थ को व्यक्त किया है। यह ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा भोगे गये यथार्थ की नहीं बल्कि पूरे दलित सामज के भागे गये यथार्थ की घटना प्रतित होती है।

दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र ओमप्रकाश वाल्मीकि की यह रचना दलित-रचनात्मकता की आस्था और प्रस्थान बिन्दु की खोज करती है। इसमें दलित साहित्य की अवधारण व प्रासंगिकता की शुरूआत की है।

सफाई देवता साहित्यकार द्वारा सफाई देवता उपन्यास का प्रकाशन 2008 में किया गया । इस पुस्तक में ओमप्रकाश वाल्मीकि द्वारा 'भंगी' समाज जिसे आज 'वाल्मीकि समाज' के नाम से जाना जाता है । उसके ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य व वर्तमान स्थिति पर प्रकाश डाला है ।

अब और नहीं .....इस कविता संग्रह में एक ओर तो वर्ण व्यवस्था के प्रति विद्रोह है तो दूसरी तरफ दलित वर्ग की महत्ता को स्थापित करने की ललक । समाज की जिस दारुण यथार्थ में कवि न सांसे ली है उसी वेदना को कवि न अपनी कलम से अभिव्यक्ति दी है ।

मुख्यधारा और दलित साहित्य में लेखक द्वारा पिछलें कई दशकों से दलित साहित्य और चितंन व विचार-विमर्श के केन्द्र में है। रचनाकार ने करीब 20 लेखों को इस संग्रह में शामिल कर पूर्ण करने का कार्य किया है ।

सलाम कहानी संग्रह की सभी कहानियां दलितों की समस्याओं और संघर्ष को बयान करती है । कहानी संग्रह सलाम को देखें तो साफ पता चलता है कि एक तरफ जहां वर्ण व्यवस्था की ताकतवर दीवार सामंतवाद को ध्वस्त करती है । वहीं दूसरी ओर दलित समाज के उस यथार्थ को व्यक्त करती है जिसमें हम जी रहे है ।

घुसपैठिये कहानी संग्रह की भूमिका में लेखक लिखता है कि-''इन कहानियों की अन्तर्वस्तु मेरे अनुभव जगत की त्रासदियों और दुःखों से उपजी सामाजिक संवेदनाएं है । जिन्हें शब्द-दर-शब्द गहरे अवसादों के साथ यंत्रणा से गुजरते हुए लिखा है । कुछ संस्कारवान आलोचकों को यह सब अतिरेक और जातिगत लगता है । विशेष रूप से उन्हें जो साहित्य में तथाकथित सार्वभौमिकता और शाश्वत सत्यों की बात करते है । घुसपैठिये में मेडिकल छात्रों की व्यथा का वर्ण किया है किस प्रकार उच्च वर्ग ने उच्च शिक्षण संस्थानों में अपनी पैठ बना रखी है । कहानी का एक पात्र अमरदीप कहता है-''रैंगिंग होती तो केवल फर्स्टईयर के छात्रों के साथ यह सलूक होता । लेकिन वहां तो सिर्फ इन दोनों को ही पीटा गया ।

अन्त में कहा जा सकता है कि दलित शब्द या दलितों पर जन्म ले चुके विवाद को खत्म कर देनी चाहिए । दलित साहित्य का ऊंचाईयों पर ले जाने वाले ओमप्रकाश वाल्मीकि इस बात ये पूरी तरह से सहमत थे । इसलिए उन्होनें अपने अन्तिम साक्षात्कार में स्वीकार किया कि प्रेमचन्द्र जैसे गैर दलित साहित्यकार पर हजारों सवाल उठायें जाए परन्तु यह स्वीकार किया कि उन्होनें दलितों की समस्याओं को अपने साहित्य का अंग बनाया । हिन्दी साहित्य में प्रेमचन्द्र ने यथार्थ को स्वीकार किया । दलित रचनाकार द्वारा प्रेमचन्द्र द्वारा रचित रचनाओं से प्रेरणा प्राप्त की है । प्रेमचन्द्र एक ऐसे रचनाकार है जिन्होंने हिंन्दी साहित्य में पाठकों की रूचि विकसित की है । प्रेमचन्द्र का अध्ययन उस व्यक्ति के लिए जरूरी है जो साहित्य को मनुष्य की बेहतर जिंदगी से देखता है जरूरी मानता है । वस्तुतः दलितों के उद्बोधन हेतु लिखा गया साहित्य दलित साहित्य है । बाद में मोहनदास नैमिशराय के विचारों में परिर्वन हो जाता हैं, वो कहते है- गैर दलितों में देखा जाए तो डॉ0महीप सिंह, कमलेश्वर, गिरीराज किशोर, पुन्नी सिंह, प्रो0 कमला प्रसाद, तथा राजेन्द्र यादव, प्रेरक कथाकार चिन्तक रहे...उन सब ने भी अपने-अपने तरीकों से दलित साहित्य को को ऊर्जा दी है । अतः निम्न या अवर्ण जातियों के हित में पूर्ण निष्ठा एवं ईमानदारी से रचा गया साहित्य दलित साहित्य है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची-

1- कुमार अजय,''दलित पैंथर आन्दोलन'',गौतम बुक सेन्टर दिल्ली, वर्ष 2015, पृ0 50 .

2-वही, पृ0 28 .

3- वाल्मीकि ओमप्रकाश,''दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र'' राधाकृष्ण प्रकाशन नई दिल्ली वर्ष 2001, पृ0 29.

4- ठाकुर हरिनारायण,''दलित साहित्य का समाजशास्त्र'', भारतीय ज्ञानपीठ नई दिल्ली, वर्ष 2014, पृ0 127 .

5- तिवारी बिहारी बजरंग,''दलित साहित्य एक अन्तयार्त्रा'',नवारूण प्रकाशन गाजियाबाद,वर्ष 2015, पृ0 24 .

6- रावत हरिकृष्ण ,''समाजशास्त्र विश्वकोष'',रावत प्रकाशन जयपुर ,वर्ष 1998 पृ0 53 .

International Research Journal
IJNRD
Research Through Innovation